आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2552 • उदयपुर, सोमवार 20 दिसम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

मूक बधिर–प्रज्ञाचक्षु बच्चों की शिक्षा

दिव्यांगता की विभिन्न श्रेणियों के क्षेत्र में सेवा करने के जुनून के साथ नारायण सेवा संस्थान ने वर्ष 2016 में गूंगे, बहरे और मानसिक विकृत बच्चों के लिए आवासीय विद्यालय की स्थापना की। वर्तमान में आवासीय विद्यालय में 82 मूकबधिर, प्रज्ञाचक्षु और मानसिक विमंदित बच्चे अध्ययनरत हैं।

इन बच्चों का बेहतर जीवन और भविष्य निर्माण करने के लिए संस्थान कटिबद्ध है। इस विद्यालय को सुचारू संचालित करने के लिए 25 सेवाभावी साधक समर्पित भाव से लगे हैं। ये दिव्यांग बच्चे इस विद्यालय से शिक्षित तो हो ही रहे हैं, साथ ही विभिन्न खेलों में प्रशिक्षित भी हो रहे हैं। इन बच्चों की उत्तम परवरिश की दृष्टि से अति–आधुनिक आवास–निवास व्यवस्था के साथ स्वास्थ्यवर्द्धक आहार भी उपलब्ध कराया जा रहा है। इन बच्चों की मुस्कराहट देखकर संस्थान में आने वाले अतिथिजन आनन्दित हो जाते हैं। यह विद्यालय राजस्थान सरकार के विशेष योग्यजन निदेशालय के सहयोग से संचालित है। इन बच्चों की कोरोनाकाल में भी अच्छे–से देखभाल हुई। संस्थान साधकों ने इनके प्रति अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाया।

बोरीवली (महाराष्ट्र) में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है। ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर नारायण सेवा संस्थान के बोरीवली (महाराष्ट्र) में संपन्न हुआ।

शिविर सहयोगकर्ता सहयोग सेवा ग्रुप, मुम्बई द्वारा राजस्थान भवन, जामली गली, बोरिवली (वेस्ट) में आयोजित शिविर में 82 दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग 33 तथा 49 के लिये कैलीपर्स की सेवा हुई। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री गोपाल जी शेट्टी (सांसद महोदय उत्तरीपूर्व, बोरीवली), अध्यक्षता श्री सुनिल जी राणे (विधायक महोदय बोरीवली), विशिष्ट अतिथि श्री प्रवीण जी शाह (नगर सेवक, बोरीवली), श्री योगेश जी लखानी (मैनेजिंग डायरेक्टर, ब्राईट ग्रुप), श्री यतीन जी मागिया, श्री संजय जी सेमलानी (सहयोग सेवा ग्रुप) कृपा करके पधारे। शिविर में श्री कमलचंद जी लोढ़ा (मुम्बई शाखा,संयोजक) शिविर में श्रीनाथुसिंहजी,श्री प्रकाश मेघवाल,(टेक्नीशियन), श्री हरिप्रसाद जी लड्डा (शिविर प्रभारी), श्रीमुकेश जी सेन, श्रीआंनद जी, श्री महेन्द्र जी जाटव मुम्बई आश्रम, श्री प्रवीण जी (विडियोग्राफर), श्री मुकेश त्रिपाठी रजिस्ट्रेन ने भी सेवायें दीं।

आकोला (महाराष्ट्र) में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय–समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है। ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर नारायण सेवा संस्थान के खण्डेलवाल भवन अलसी, प्लॉट आकोला में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता नारायण सेवा संस्थान शाखा आकोला द्वारा शिविर में 195 का रजिट्रेशन दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग वितरण 175, कैलीपर्स वितरण 20, की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री गोपाल जी खण्डेलवाल (अध्यक्ष खण्डेलवाल समाज आकोला), अध्यक्षता श्री सभापति जी शुक्ल (डायरेक्टर दमामी नेत्र चिकित्सालय), विशिष्ट अतिथि श्रीमती मंजू देवी गोयना (समाज सेविका), श्री दीपक जी बाबू भरतीया (उद्योगपति, गौररक्षण अध्यक्ष), श्री रणधीर जी सावरकर (विधायक आकोला), श्री हरीश जी मानधणे (शाखा संयोजक नारायण सेवा संस्थान आकोला), श्री सुभाष जी लोढ़ा (सदस्य), श्री शिव भगवान जी भाला (उद्योगपति समाजसेवी), श्री नाथूसिंह जी, नरेश जी वैष्णव (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री हरिप्रसाद जी लढ्ढ़ा (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी, श्री भरत जी भट्ट (सहायक), श्री प्रणीण जी (विडियोग्राफर), श्री फतेहलाल जी (फोटोग्राफर) ने भी सेवायें दी।

सीकर (राजस्थान) में दिव्यांग जांच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगों को मूलधारा में लाने के लिये उनको ऑपरेशन, कृत्रिम अंग निरूपण तथा सहायक उपकरणों द्वारा नारायण सेवा संस्थान सतत् सहयोग कर रहा है।

ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर नारायण सेवा संस्थान द्वारा श्री मदनलाल भीकमचंद बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, सीकर में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता समदृष्टि क्षमता विकास तथा अनुसंधान मंडल, सीकर द्वारा शिविर में 106 का रजिट्रेशन दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 11, कैलीपर्स माप 28 तथा ऑपरेशन चयन 16 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री सुबोधानंद जी महाराज (सांसद महोदय, सीकर), अध्यक्षता श्री रतनलाल जी शर्मा (प्रांतीय अध्यक्ष सक्षम), विशिष्ट अतिथि श्रीमति प्रतिभा जी पूर्व सरपंच, श्रीमान राधाकिशन जी (समाजसेवी), श्रीमती सीमा जी सारंग (ए.डी.जे. सीकर), श्री राकेश जी पारीक (प्रधानाचार्य), श्री महेन्द्र जी मिश्रा(सक्षम), शिविर में श्री उत्तम जी (टेक्नीशियन), श्री मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री भरत जी भट्ट सहायक ने भी सेवायें दी।

प्रकाश के सपनों को मिले पंख

नाम प्रकाश था किन्तु जीवन उसे अंधकार में दिख रहा था। वह खूब पढ़कर परिवार और गांव के लिए कुछ करना चाहता था। लेकिन आर्थिक समस्या उसके इस सपने को पूरा करने में बाधक थी। ऐसे में नारायण सेवा संस्थान उसका मददगार बना और आगे की पढ़ाई का रास्ता खोलकर उसके सपनों को पंख लगा दिए। राजस्थान के उदयपुर जिले के आदिवासी क्षेत्र कोटड़ा निवासी प्रकाश बम्बुरिया ने बचपन में ही माता–पिता को खो दिया था। दादा–दादी उसकी परवरिश तो करते रहे लेकिन गरीबी और वृद्धावस्था के कारण वे न तो अपनी और न ही बच्चे की देखभाल ठीक से कर पा रहे थे।

इसी दौरान संस्थान का कोटड़ा में सेवा शिविर था। जिसमें ट्रस्ट के शिविरकर्मियों द्वारा बच्चे की हालत देखकर उसे संस्थान में लाने का निर्णय लिया गया। उसे नारायण चिल्ड्रन एकेडमी में भर्ती किया गया। पांच वर्ष की उम्र से प्रकाश ने संस्थान में रहते हुए अपनी ग्यारहवीं तक की पढ़ाई पूरी की।

इस होनहार ने 10वीं बोर्ड की परीक्षा 73 प्रतिशत अंक से उत्तीर्ण की है। प्रकाश की काबिलियत को देखते हुए संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बारहवीं में अच्छे अंक हासिल करने के उद्देश्य से उसे एक जाने–माने कोचिंग सेंटर से कोचिंग का निर्णय लिया।

जिसके लिए 6500 रुपये शिक्षण शुल्क के रूप में प्रदान किए गए ताकि वह अपनी मेहनत और योग्यता के बल पर बड़ी उपलब्धियां हासिल कर जीवन को अपने नाम के अनुरूप सार्थक कर सके।

सुधा ने छोड़ी बेशाखी

26 नवम्बर 2019 की उस मनहूस सुबह को सुधा कश्यप जब याद करती हैं तो सिहर उठती है। इस दिन वह सोनाली के साथ महाराष्ट्र के चन्द्रपुर जिले के वराड़ा रेलवे स्टेशन की पटरी पार कर रही थी कि ट्रेन ने उनके बाएं पांव के पंजे को लील लिया।

परिजनो ने सुधा का बहुत इलाज करवाया किन्तु जख्म बढ़ता हुआ घुटनों तक पहुंच गया। यह भी दुर्योग था कि नागपुर अस्पताल में उन्हें जिन्दगी बचाने के लिए अपना पैर कटवाना पड़ा।

वे बैसाखी से चलने लगी।इससे पहले दो ऑपरेशन भी हुए जो नाकाम रहे और पैसा भी कॉफी खर्च हुआ। इन्होंने कृत्रिम पांव लगवाने की साल भर तक कोशिशें की लेकिन लाख –डेढ़ का खर्च इनके बूते से बाहर था।

इसी दौरान नारायण सेवा संस्थान का दिव्यांगों की चिकित्सा व सहायता के लिए चयन शिविर लगा। वेप्रभारी महेश अग्रवाल से मिले और इन्हें उदयपुर में संस्थान के द्वारा निःशुल्क कृत्रिम पांव लगाने की जानकारी दी।

यह उदयपुर आए, डॉ माथुर द्वारा परीक्षण करने के बाद कृत्रिम पैर का निर्माण किया। संस्थान को धन्यवाद देते हुए रेलवे स्टेशन की ओर रवाना हुई।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

आप प्रतिक्षण ये अनुभव करो। जब तक आपके भाव बढ़िया है। प्रज्ञा जागृत है, समझदारी अच्छी है। मन्थरा जैसी दुर्बुद्धि नहीं होनी चाहिये। मन्थरा ने तो इतनी दुर्बुद्धि की कि हर तरह से कैकेयी को पहले कहती थी– लक्ष्मण ने आपको कुछ कह तो नहीं दिया? तेरे गाल तो नहीं फूल गये? अरे! माई किसके आधार पर गाल फुलाऊंगी? आज सबसे ज्यादा तो कौषल्या सुखी है। कद्रु और विनिता गरूड़ माता विनिता का उदाहरण दे दिया। गरूड़ जी की माता विनिता को जैसे नाग माता कद्रु ने दुःख दिया। वैसे दुःख तेरे को देंगे। नाग क्या है? विषधर क्या है? ये हमारे विकार, ये हमारा क्रोध, काम की अग्नि।

काम बात कफ लोभ अपारा ।
क्रोध पित्त नित छाती जारा।।

कोई कहते हैं– मोह क्या हुआ? अज्ञान, ज्ञान ही नहीं है। माता से कैसे बोलना चाहिये? कड़क बोल दिये। माताजी को रोज प्रणाम करो। मानसिक प्रणाम करो। मुझे माताजी का वो दृष्य बार–बार स्मरण आता है। जब मैं भोजन के लिये बैठा था– थाली ले के। माताजी रोटी बनाती हुई गीताजी का पाठ कर रही थी। अठारवां अध्याय का। क्या अर्जुन तेरा मोह दूर हुआ? क्या अर्जुन तूं ज्ञानमार्ग पर चला? ज्ञानमार्ग– महाराज कहानियों को तो आप ने सुना ही है। आप तो दोहा बोलो। आप तो माणो मनोरंजन करो।

स्नेहमयी संस्काराय, प्रेममयी उपकाराय,
करूणामयी उपकाराय नमः।

परिवार कृतार्थ नमः। परिवार का कर्त्तव्य निभाना। बुजुर्गों का सम्मान करना। बच्चों को पुचकारना। बच्चे को स्नेह देना। बच्चे तो ये छोटे – छोटे होते हैं ना? ये दो रुपया रा गुब्बारा आवे। दो रुपयाऊं ज्यादा रो नी आवे। ये दे दिया करो। ये गुब्बारा बच्चों को देंगे। बच्चे खुश हो जायेंगे।

सेवा – स्मृति के क्षण

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

सम्पादकीय

हमारे देश की आदिकालीन परम्परा है जयघोष की। तब से अब तक प्रत्येक शुभ कार्य में जो घोष लगते हैं वे हैं –'धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो।'

ये चार जय घोष नहीं वरन् भारतीय संस्कृति व सभ्यता के मानक हैं। धर्म व अधर्म का भेद सभी जानते हैं। धर्म का आशय यहाँ किसी मत, पंथ, संप्रदाय या पूजा पद्धति से न होकर नैसर्गिक धर्म से हैं। परमात्मा के गुणों का मानवीकरण ही धर्म है, इसके अंतर्गत सत्य, अहिंसा, करुणा, परार्थ आदि भावों का समावेश है। अधर्म इसका विपरीत है, अतः कामना यही की जाती है कि अधर्म का नाश हो। यहाँ अधर्म की पराजय नहीं कहा है, जय की तुक में पराजय इसलिये नहीं कहा है कि पराजित होने पर भी अस्तित्व तो रहता ही है। हमारी संस्कृति किसी भी रूप में अधर्म को स्वीकार नहीं करती है। हर प्राणी सद्भावना से जीये तथा समस्त विश्व का कल्याण हो। यही भाव 'वसुधैव कुटुम्बकं' में भी परिलक्षित होता है। इसलिये इन्हें केवल घोष नहीं मानकर संस्कृति के सूत्रों के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहिये।

कुछ काव्यमय

मानवीय गुणों का संचय,
मानवता का पालन।
मानव कल्याण का भाव
और मानव-मन संचालन।
ये भले कठिन हो
पर अनिवार्य है।
इनके बिना मानव।
किसे स्वीकार्य हैं ?

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

समभाव

सुमित्रा जी बोली न जीजीबाई न, ये बातें मत करो।

वीर न अपना देते हैं,
न वे औरों का लेते हैं।
वीरों की जननी हम है,
भिक्षा हमें मृत्यु सम है
हम तो वीरों की माता है।
लक्ष्मण की तरफ देखा।
लक्ष्मण शांत रहोगे तुम,
तुम शेषावतार लक्ष्मण जी
मंजली माँ तूं मरी न क्यों
लोक लाज से डरी नहीं क्यों।
वो लक्ष्मण जी ने सोचा
माँ क्या करूँ कहो मुझसे;
क्या है कि जो न हो मुझसे।
अंगीकार आर्य करते,
तो कब के द्रोही मरते।
आज्ञा करें आर्य अब भी,
बिगड़ा बने कार्य अब भी।
लक्ष्मण ने प्रभु को देखा,
न थी उधर कोई रेखा।
बोलिये रामचन्द्र भगवान की जय।
मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान की जय।

भगवान के चेहरे पर कोई तनाव नहीं, कोई गुस्सा नहीं। बोली माँ ये घर की बात है, घर में घर की शांति रहेगी। कुल में कुल की क्रांति रहे। भैया भरत अयोग्य नहीं। राम भगवान की कृपा प्राप्त करे। माला जितनी आप फेर रहे हो बहुत अच्छा। राम नाम की पुस्तिका भी आती है, कॉपियाँ भी आती है। मेरे पूज्य जीजाजी अमृतसर में राम– नाम लिखते थे, कॉपियाँ की कॉपियाँ भर दी, दुकान में

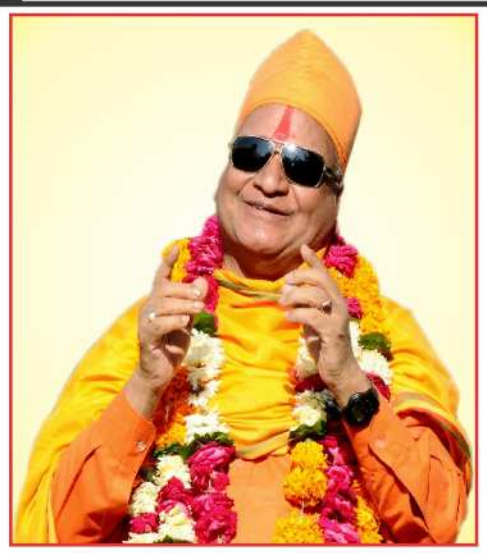

रहती थी, सिखों के खालिस्तान के नाम से नालायक लोगों ने बहुत हिंसा की थी। उस समय 12 दुकानें एक लाईन में थी, 11 दुकानों को आग लगा दी। और 12 वीं दुकान के पास आये बोले चलो। दूसरी तरफ चलो केवल एक दुकान बच गई। ये राम नाम की पोथी की महिमा है, ऐसे राम भगवान बोले– भैया भरत अयोग्य नहीं, राज्य राम का भोग्य नहीं। फिर भी वह अपना ही है, यों तो सब सपना ही है।।

चार पंक्ति ने तो मेरा मन मोह लिया। ये बात मैं साकेत का स्वाध्याय करने की निवेदन कर रहा हूँ।

1976 में जब पूज्य राजमल जी भाई साहब के सम्पर्क में आया। उनके आँखों के शिविरों में जाया करता था। बस स्टेण्ड जाता। रास्ते में ऑटो चलता रहता और मैं कुछ लाइनें पढ़ता रहता फिर बस में बैठते बस में भी लाईट रहती थी या दिन का टाईम रहता तो लाईट ऐसे भी रहती थी। बस चलती रहती। मैं पढ़ता रहता राम–भरत में भेद नहीं, भैया भरत अयोग्य नहीं। और राज्य राम का भोग्य नहीं। राजा रामचन्द्र जी इसलिए नहीं आये। भोग भोगना है। भोग–भोगने के लिए देह नहीं मिली। ये देह क्षमता भाव की दृष्टि के लिए मिली है– लाला! ये किडनी अपना कार्य करती आ रही है। ये आपकी –हमारी आज्ञा में नहीं है। किडनी में इन्फेक्शन हो जावे तो रात के तारे दिन को नजर आने लग जाते है। डाईलीसीस करना पड़ता है। लाखों भाई हमारे डाईलीसीस करवा रहे हैं। मंगल हो वो ठीक हो जावे, उनके स्वास्थ्य की अच्छी कामना करते है। परन्तु ये हमारा शरीर जिसको शरीर कहते है, वो मेरा नहीं है। ये मैं कहता हूँ। मेरी ध्वनि मेरी नहीं है, ये बखान मेरा नहीं है। क्या मेरा है? ये मैं कितनी भी चीजे बता दूं ये तो आप भी बता सकते हैं। एक चीज मैं बताऊंगा। आप दो बता सकते हैं, आप बहुत–बहुत सयाने है।

धर्म को जीवन में धारण कर लें। कहते हैं न भोजन वही अच्छा जो पच गया। कहते है न, जो शरीर को लगा वो अपना उसी से रक्त बनेगा। ये स्टमक, ये आमाशय सब भगवान ने दिये है। इन पर हमारा कोई वश नहीं चलता, हमारा वश चलता है, अपनी जीह्वा पर, एक दाना भी श्रीमुख में प्रवेश करावे तो सोचें ये दाना मेरे देह में जाकर क्या करेगा? यदि मेरे देह में जाकर के अच्छा पोषण करेगा। यदि स्टमक इसको पचा लेगा। लीवर 550 तरह के रसायन बना लेगा। ये रक्त में मिल जायेगा। रक्त मेरे शरीर में दौड़ेगा, मुझे ऊर्जा मिलेगी। मुझे ज्ञान मिलेगा केवल ऊर्जा की देह धारा होती है।

–कैलाश 'मानव'

निर्मल मन वाला ईश्वर को पंसद है

मीरा को विष का प्याला दिया गया था। मीरा ने उसे पी लिया, लेकिन उस विष को, प्रेम ने अमृत बना दिया। उसे काँटों की सेज पर सुलाया गया, लेकिन प्रभु–प्रेम के चलते, वह भी फूलों की सेज में बदल गई। एक बार भगवान श्रीराम ने हनुमान जी को मनकों की माला उपहार में दी। हनुमान जी हाथ में लेते ही उसके एक–एक मनके को तोड़कर उसमें कुछ ढूंढने लगते हैं।

भगवान श्रीराम ने पूछा कि इसमें क्या

ढूंढ रहे हो हनुमान? हनुमान जी ने कहा– प्रभु ! यह माला मेरे लिए किसी काम की नहीं, क्योंकि इसमें आपका नाम और दर्शन नहीं। पास खड़े किसी भक्त ने पूछ लिया कि हनुमान जी आप में राम कहाँ है। हनुमान जी ने कहा कि मेरे रोम–रोम में श्रीराम हैं और यह कहकर हनुमान जी ने उसी समय छाती फाड़कर, भगवान श्रीराम व सीताजी के दर्शन करा दिए। इसी तरह भक्ति प्रगाढ़ होनी चाहिए। अटूट–अखण्ड भक्ति ही व्यक्ति का प्रभु से मिलन कराती है। प्रह्लाद को हिरण्यकश्यप ने नाना प्रकार के दुःख दिए, लेकिन हर दुःख में परमात्मा की भक्ति थी, प्रभु श्रीविष्णु की भक्ति थी। इसलिए प्रह्लाद का हर दुःख, सुख में तब्दील हो गया। होलिका (प्रह्लाद की बुआ) को अग्नि में न जलने का वरदान प्राप्त था। किंतु वह भी जब प्रभु के परम भक्त प्रह्लाद को गोद में लेकर अग्नि में बैठी, तो उसका दहन हो गया, किन्तु प्रभु–भक्त बालक प्रह्लाद को कुछ नहीं हुआ। ये भक्ति का चमत्कार है। जब भगवान के साथ भक्त इस तरह एकाकार हो जाता है तो भक्त, भक्त नहीं रहता, वह भगवान का ही हो जाता है। इसलिए भगवान का होने के लिए वे सब चीजें करनी पड़ेगीं, जो भगवत् प्रप्ति के लिए जरूरी हैं। शबरी में लोभ नहीं था, लालच नहीं था, ईर्ष्या नहीं थी, वैमनस्य नहीं था, द्वेष नहीं था, किसी की निंदा नहीं करती थी, किसी को आलोचना नहीं करती थी। उसके पास धन नहीं था, वैभव नहीं था, वर्चस्व नहीं था, किंतु उसका हृदय निर्मल था, वह किसी को दुःख, पीड़ा, कष्ट नहीं देती थी। वह किसी की व्याधि का कारण नहीं बनती थी। उसने तो केवल एक ही काम किया, भगवान को सच्चे हृदय से प्रेम किया।

आज के परिवेश में यदि विचार करें, तो भगवान तब मिलेंगे, जब आप घर में बच्चों को प्रेम दे सकें, पिता की आज्ञाका पालन करें, पड़ोस का बच्चा भूखा हो तो आप उसे रोटी खिला सकें। किसी पड़ोसी की निंदा न करें, आलोचना न करें। किसी के भी प्रति ईर्ष्या व द्वेष की भावना न हो। बेशक आप मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर, मत जाइए। आपके हृदय के अन्दर स्वच्छता है, निर्मलता है, आप किसी का बुरा नहीं चाहते, सबके प्रति प्रेम–स्नेह की भावना रखते हैं, अपने धन का सर्वथा सदुपयोग करते हैं तो आपको भगवान के दर पर जाने की आवश्यकता नहीं है, भगवान स्वयं आपके द्वार आकर आपको गले से लगा लेंगे।

शबरी राम के दरबार में गई थी क्या? विदुर की पत्नी कृष्ण के दरबार मे गई थी क्या? राम, कृष्ण दौड़े चले गए, उन दोनों के घरों में। वे केवल प्रेम के वशीभूत होकर नहीं गए, बल्कि उन दोनों का ही हृदय बहुत निर्मल और स्वच्छ था। इतना स्वच्छ कि भगवान दौड़े चले गए उस हृदय की ओर। एक बात सत्य है, यदि परमात्मा को प्राप्त करना है तो अपनी कमियों को दूर करना पड़ेगा। हमारे हृदय से निर्मलता की सुगन्ध आनी चाहिए। कहते हैं – भजन करे पाताल में, तो प्रकट भई आकाश, दाबी–दूबी ना दबे, कस्तूरी की बास। भजन पाताल में करो, मुँह से आवाज न आए, लेकिन उन भजनों में उस स्वच्छ–निर्मल हृदय से निकली हुई प्रार्थना से भगवान भी प्रकट हो जायेंगे। इसके विपरीत आप खूब चिल्लाओ, बहुत अरदास करो, जोर–जोर से भजन गाओ, लेकिन हृदय स्वच्छ नहीं है तो भगवान सुनेंगे भी नहीं। भगवान को चिल्लाना पसन्द नहीं है, भगवान को तो निर्मल हृदय पसन्द है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

इसी तरह राजस्थान के बारां जिले के अटरू में एक बार शिविर किया। जहां भी शिविर करते, कैलाश का प्रयास रहता कि आस पास कहीं कोई भूखा– नंगा हो तो उसे भोजन करा दिया जाये, कपड़े दे दिये जाय। अटरू में भी यही देखने बाहर निकले तो दूर किसी के कपड़े धोने की आवाज आई। रात हो चुकी थी, इस समय कौन कपड़े धो रहा है यह जानने के लिये पास गये तो एक व्यक्ति कपड़े धोते नजर आया। कैलाश ने उससे पूछा कि इस समय आप कपड़े क्यूं धो रहे हैं ? वह बोला – धोबी किसी की मौत में चला गया है, सुबह यहां एक शिविर का उद्घाटन करना है, मेरे पास अन्य कोई कपड़े भी नहीं, इसलिये सोच रहा हूं कि साफ कपड़े पहन कर जाना है तो अभी धो कर सुखा दूं।

कैलाश इस व्यक्ति को नहीं जानता मगर जब उसने कहा कि सुबह शिविर का उद्घाटन करना है तो उसका माथा ठनका। शिविर का उद्घाटन राजस्थान सरकार के केबीनेट मंत्री मदन दिलावर करने वाले थे। कैलाश के मन में विचार कौंधा कि कहीं यह व्यक्ति मदन दिलावर तो नहीं, उसकी उससे पूछने की हिम्मत तो नहीं हुई मगर उसने इतना जरूर कहा कि– आप क्यूं धोते हैं ? हम धो देते हैं। वह व्यक्ति नहीं माना तो वह वापस शिविर मे लौट गया।

सुबह उसी व्यक्ति को शिविर के उद्घाटन हेतु आते देखा तो वह नतमस्तक हो उठा। वह व्यक्ति मदन दिलावर ही था। एक मंत्री की ऐसी सादगी और सहजता देख कैलाश भाव विभोर हो उठा। उसके मन की इससे और बल मिल गया कि देश में अच्छे व्यक्तियों की कमी नहीं, सिर्फ उनकी पहचान नहीं हो पाती।

अंश - 187

पोष्टिक खुराक बालों को रखे सेहतमंद

खूबसूरत और हैंडसम दिखने के लिए आज के नौजवान अपने बालों पर कई तरह के प्रयोग करते रहते हैं। अगर आप भी ऐसा करते हैं तो सावधान हो जाएं। इससे आपके बालों को नुकसान पहुंच सकता है। बालों की समस्या आजकल आम होती जा रही है, लेकिन कुछ बातों और हेयर स्पा को अपना कर बालों को सेहतमंद रखा जा सकता है। तरह–तरह के हेयर कट, हेयर जैल और हेयर कलिरंग इत्यादि से प्रारंभ में बाल खूबसूरत जरूर दिखते हैं, लेकिन बाद में बालों को संवारने के लिए किया गया यही जतन उनकी सेहत के लिए महंगा साबित हो सकता है। बदलता मौसम आप के बालों के लिए सबसे खराब समय होता है। इस दौरान रूसी, बालों के उलझाव, टूटने, कठोर होने तथा जड़ों से उखड़ने जैसी अनेक समस्याओं से आपके बालों को जूझना पड़ता है।

बालों के लिए नुकसानदेह – असंतुलित भोजन, शारीरिक स्वास्थ्य में खरीबी, अनियमित जीवनशैली, सौंदर्य प्रसाधनों का अनुचित इस्तेमाल और गलत हेयर स्टाइल का चयन करने से बाल झड़ने लगते हैं। उपरोक्त अनियमितताएं बालों की समस्याओं के लिए मुख्य कारण हो सकती हैं।

खान–पान में शामिल करें– बालों को सेहतमन्द रखने के लिए ज्यादा पौष्टिक खुराक लेनी चाहिए। जितना हो सके होलग्रेन और ड्राई फ्रूट का सेवन करें, क्योंकि इनमें बायोटीन की मात्रा अधिक होती है। आप प्रोटीन युक्त हेयर पैक का इस्तेमाल कर सकते हैं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

कैलाश चन्द्र अग्रवाल ने थोड़ी ही झाडोल के लिए तैयारी की थी। कैलाश चन्द्र अग्रवाल ने थोड़ी ही पौष्टिक आहार बनाया था। किसी शक्ति ने बनवा दिया। कैलाश चन्द्र तो अंदर एक गांठ हो जावे तो गांठ को नहीं हटा सकता। ऊपर भी हो जावे तो नहीं हटा सकता। दवाइयाँ लगा रहे हैं। अरे! कहीं खुरचने से इन्फेक्शन हो जाएगा? हो गए इन्फेक्शन ठीक हो गए। 1300 किलो आटे का सत्तू बना। दिन को 4 बज गई। कार्टून जो पाँच पाँच किलो के डिब्बे हैं। सोयाबीन तेल के खोले गए थे। अंदर की पत्ती काटी गई थी। वो खाली डिब्बे हैं। डिब्बे जिसमें आए थे कार्टून भी बहुत बढिया है। थैलियाँ भी उसमें रख दी। बाल बच्चे आ गए।

जैन साहब के बच्चे, कल्पना आ गई– दौड़ी दौड़ी। कल्पना करती रही, प्रशांत करता रहा। कमला जी करती रही, कौनसी शक्ति करती रही? पारब्रह्म परमात्मा की शक्ति जिस शक्ति ने मफत काका को राजमल जी भाई साहब को प्रेरणा दी। डॉ अग्रवाल साहब को प्रेरणा दी। मेरी मदद करो, मदद करो, मदद की। सत्तु बना कर रख दिया। थोड़ा संतोष हुआ। अब अगले रविवार, 26 तारीख को वितरण करने चलेंगे। डॉ. पामेचा साहब हाँ, हाँ, कैलाश जी चलूंगा– चलूंगा। ले लेना मेरे को डॉ. एस.एन. शर्मा साहब, डॉ. मेहता साहब, विष्णु जी शर्मा हितैषी, हितैषी भवन से, अजय जी गुप्ता युनिवार्ता से आदरणीय सकुनी साहब आकाशवाणी से, आदरणीय बलवंत सिंह जी मेहता साहब मेहता भवन से, हॉस्पिटल के सामने से, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पूर्व विधि मंत्री पूर्व मेम्बर ऑफ पार्लियामेंट 75 साल की उम्र घासी राम जी अग्रवाल साहब अशोक नगर और उनकी धर्मपत्नी अन्नी बाई जी।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 314 (कैलाश 'मानव')

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay | PhonePe | Paytm
narayanseva@sbi

Head Office: 483, Sevadham, Sevanagar, Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA
+91 294 662 2222 | +91 7023509999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023